पाठ 7. सादगी की मूरत

पाठ की भूमिका

प्रस्तुत पाठ देश की महान विभूतियों में से एक, राजेंद्र प्रसाद, के जीवन से संबंधित है। इस पाठ में उनके व्यक्तित्व के उस पहलू से रूबरू कराया गया है जिसमें उनकी सादगी व सद्व्यवहार की झलक मिलती है। इस पाठ के माध्यम से बच्चों में चीज़ों व घटनाओं को देखने और करने का अभिनव तरीका अपनाने का कौशल विकसित हो सकेगा।

पाठ का सार

एक बार राजेंद्र बाबू कमरे में बैठे कुछ काम कर रहे थे, उसी समय उनके पुराने नौकर से भूलवश वह कलम टूट गई जो उन्हें उपहारस्वरूप मिली थी। राजेंद्र बाबू ने क्रोधवश तुलसी को डाँट दिया। राजेंद्र बाबू को बाद में लगा कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था तब उन्होंने तुलसी से क्षमा माँगी। तुलसी भाव विह्वल होकर राजेंद्र बाबू के चरणों पर गिर पड़ता है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  इस पाठ में राजेंद्र बाबू के जीवन से जुड़ी एक घटना का वर्णन है। राजेंद्र बाबू का संक्षिप्त परिचय दें। उनके व्यक्तित्व व स्वभाव के बारे में तथा भारत की आज़ादी में उनके योगदान के बारे में बताया जा सकता है। पाठ से मिलने वाली शिक्षा पर बल दें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 10** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - बच्चों को उदाहरण देकर समझाएँ कि कुछ शब्द किसी काम के करने या होने के बारे में बोध कराते हैं।
  - प्रश्न संख्या 5 के अंतर्गत क्रिया में 'कर' परसर्ग को जोड़ने से संबंधित अभ्यास दिए गए हैं। मानक रूप में ऐसा ही होता है। ऐसा लिखने की आदत बच्चे अभी से डाल लें तो आगे चलकर हिंदी के मानक रूप को समझने में आसानी होगी।
  - बच्चों को बताएँ कि कुछ शब्दों के मिलते-जुलते अर्थ वाले अन्य शब्द भी होते हैं। ऐसा समझ लेने पर आगामी कक्षाओं में समानार्थी शब्द को समझना आसान रहेगा।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - इस क्रियाकलाप को कराने के क्रम में हाव-भाव पर विशेष बल दें तथा संवादों के बोलने में उतार-चढ़ाव पर भी ध्यान दें। ऐसा करने से कहानी के केंद्रीय भाव को समझने में आसानी होगी।